आखर हिंदी पत्रिका e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022
Received: 03/12/2022; Accepted: 14/12/2022; Published: 24/12/2022

कहानी

अनोखा उपहार

आज समीर का जन्मदिन है। उसके दादा –दादी हर वर्ष जन्मदिन पर उसे कुछ न कुछ उपहार देते आये हैं। इस कारण आज वह बहुत प्रसन्न है। लगभग आठ बजे दरवाजे की घंटी बजी। समीर समझ गया कि दादा –दादी आ गये हैं। समीर ने दादा –दादी के पैर छुए, दोनों ने आशीर्वाद दिया और जन्मदिन की बधाई दी। समीर ने व्याकुलता के साथ अपने उपहार के बारे में पूछा।

तब दादा जी ने कहा – "समीर चलो कार में बैठो, उपहार तुम्हें मिल जाएगा।" यह सुनकर समीर की आँखें चमक उठी। वह दौड़कर गया और कार के अन्दर बैठ गया , उसके साथ दादा - दादी और माता – पिता भी बैठ गए।

पूरा परिवार निकल पड़ा विशाखापत्तनम से करीब 100 किलोमीटर दूर अरकू वैली की ओर। समीर के मन में जिज्ञासा की भावना बढती ही जा रही थी कि आखिर दादा जी आज क्या अनोखा उपहार देने वाले है ? उसकी आँखें खिड़की से हटती ही नहीं थी। मार्ग की ऊँची पहाड़ियाँ और गहरी घाटियाँ उसके मन को मोह रही थी। प्रकृति की सुंदरता देखने लायक थी। पूरा मार्ग वन श्री की शोभा से आच्छादित था।

करीब 11 बजे सभी अरकू पहुँच गए। गाड़ी से उतरते ही, वहाँ की महिलाओं और बच्चों ने समीर को जन्मदिन की बधाई दी और फूलों की माला भी पहनाई।

समीर और उसके परिवार के स्वागत में सभी महिलाओं ने नृत्य भी किया और गीत भी गाए। समीर ने अपने दादा जी से पूछा, दादा जी ये क्या गा रही है और ये कैसा नृत्य है ? क्या यह कोई लोकनृत्य है, इसका नाम क्या है ? इसकी क्या खासियत है, क्या आप मुझे बता सकते है ?

तब दादा जी ने समीर की भेंट मल्लप्पा और मदियम्मा से करवाई। मल्लप्पा ने समीर को बताया कि इस लोकनृत्य का नाम धिम्सा है। धिम्सा नृत्य आंध्र प्रदेश के लोक नृत्यों मे से एक हैं। इसकी उत्पत्ति ओड़िसा के कोरापुट में हुई पर अब यह अरकू का अधिकारिक नृत्य बन चुका है।

मदियम्मा ने कहा – " बेटा यह हमारी जनजाति के द्वारा किया जाने वाला सांस्कृतिक नृत्य है। इसमें हम महिलाएँ 15 - 20 के समूह में श्रृंखला बनाकर हाथों और पैरों का ताल से ताल मिलाते हुए धीमी गति से नृत्य करती है।" इस नृत्य की वेशभूषा विशिष्ट जनजातीय कपड़े है, जिनमें उचित अलंकरण भी हैं। धिम्सा नृत्यों में आठ अलग-अलग श्रेणियाँ हैं।

समीर ने पूछा – "इस लोकनृत्य में किसी प्रकार के उपकरणों या वाद्य यंत्रों का भी प्रयोग होता है क्या ?"

मल्लप्पा और मदियम्मा ने कहा हाँ समीर बेटा - नृत्य करने वाले सदस्य दप्पू (एक छोटी छड़ी के साथ ड्रम), टुडुमू, मोरी, किरदी और जोदुकोमुलु खेलते हैं। ढोल की थाप पर नृत्य किया जाता है और आमतौर पर संगीत पुरुषों द्वारा बजाया जाता है।

मदियम्मा ने कहा – इस अवसर पर हम विशेष पोशाक और आभूषण भी पहनती है, साड़ी को हम घुटनों के नीचे तक बाँधती है साड़ी के रंग भी हरे ,लाल , पीले और मटमैले होते है। समीर ने पूछा – यह नृत्य क्या हमेशा किया जाता है या किसी विशेष अवसर पर किया जाता है।

तब मल्लप्पा में कहा – धिम्सा नर्तक त्यौहारों के मौसम, गाँव के मेलों और विवाह समारोहों के दौरान अपनी प्रस्तुतियाँ देते हैं। धिम्सा नृत्य की मूल विशेषता पड़ोसी गाँवों के बीच मित्रता स्थापित करने का प्रयास है।

समीर के माता –पिता ने बताया कि – इस जनजाति के लोग पौराणिक कहानियों और कथाओं को लोकगीतों के रूप में उत्सवों और समारोहों में गाते है। इसलिए ये गीत भी हमारी परम्परा और संस्कृति के धरोहर है इन्हें भी हमें संभाल कर रखना है।

समीर ने कहा इस लोकनृत्य के पीछे इतनी बड़ी कहानी छिपी है । दादा जी आज तो मेरे जन्मदिन का उपहार सचमुच अनोखा था।

तब सभी ने कहा अभी और भी है जरा रुको तो .....

समीर ने देखा वहाँ बड़ा सा केक और ढेर सारे चाकलेट्स हैं। दादा जी बोले चलो, अब काटों केक और हम भी धिम्सा नृत्य करेंगे इन के साथ । सभी बहुत खुश होते हैं। समीर का तो खुशी का ठिकाना न रहा, आखिर यह उसका सबसे यादगार जन्मदिन था।

आई. संतोष कुमार

****